Shri Kamakhya Kavacham

श्रीकामाख्या कवचम्

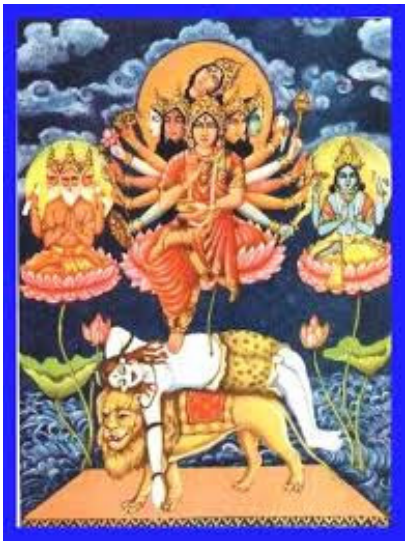

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

भगवती कामाख्या सर्वसिद्धिदायक विद्या हैं। सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक विद्याओं में भगवती कामाख्या विद्यमान हैं। इनकी तांत्रिक उपासना द्वारा मनुष्य सर्वबाधाओं से विमुक्त होकर धनैश्वर्य को प्राप्त कर सकता है। कामाख्या कवच भगवती कामाख्या का रक्षास्त्र है। इस महाकवच का नित्य पाठ एवं भोजपत्र पर निर्माण कर कण्ठ या भुजा में धारण करने से मनुष्य सर्वप्रकार की तांत्रिक शक्तियों एवं दुष्टशत्रुओं से सुरक्षित रहता है तथा भगवती कामाख्या की कृपासिद्धि भी प्राप्त करता है। कवच की 108 आवृत्तियां करना लघु सिद्धिकरण है। 1008 बार पाठ करने से मध्यम तथा कवच की 11000 आवृत्तियां करने से महासिद्धि प्राप्त होती है। महासिद्धिकरण सुयोग्य गुरु के संरक्षण में करना ही लाभकारी होता है।

कवचम्– ॐ कामाख्याकवचस्य मुनिर्बृहस्पतिः स्मृतः। देवी कामेश्वरी तस्य अनुष्टुप्छन्द इष्यते।।

विनियोगः सर्व्वसिद्धौ तंच शृण्वन्तु देवताः। शिरः कामेश्वरि देवी कामाख्या चक्षुषी मम।।

शारदा कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं तथा। कण्ठे पातु महामाया हृदि कामेश्वरि पुनः।।

कामाख्या जठरे पातु शारदा पातु नाभितः। त्रिपुरा पाश्वर्योः पातु महामाया तु मेहने।।

गुदे कामेश्वरी पातु कामाख्योरुद्वये तु माम्। जानुनीः शारदा पातु त्रिपुरा पातु जंघयोः।।

महामाया पादयुगे नित्यं रक्षतु कामदा। केशे कोटेश्वरी पातु नासायां पातु दीर्घिका।।

(शुभगा) दन्तसंघाते मातंग्यवतु चांगयोः। बाह्वोर्म्मां ललिता पातु पाण्योस्तु वनवासिनी।।

विन्धयवासिन्यंगुलीषु श्रीकामा नखकोटिषु। रोमकूपेषु सर्व्वेषु गुप्तकामा सदावतु।।

पादांगुलिपार्ष्णिभागे पातु मां भुवनेश्वरी। जिह्वायां पातु मां सेतुः कः कण्ठाभ्यन्तरेऽवतु।।

पातु नश्चान्तरे वक्षः ईः पातु जठरान्तरे। सामिन्दुः पातु मां वस्तौ विन्दुर्व्विद्वन्तरेऽवतु।।

ककारस्त्वचि मां पातु रकारोऽस्थिषु सर्व्वदा। लकारः सर्व्वनाडिषु ईकारः सर्व्वसन्धिषु।।

चन्द्रः स्नायुषु मां पातु विन्दुर्मज्जासु सन्ततम्। पूर्व्वस्यां दिशि चाग्नेय्यां दक्षिणे नैर्ऋते तथा।।

वारुणे चैव वायव्यां कौवरे हरमन्दिरे। अकाराद्यास्तु वैष्णवा अष्टौ वर्णास्तु मंत्रगाः।।

पान्तु तिष्ठन्तु सततं समुद्भवविवृद्धये। ऊर्ध्वाधः पातु सततं मान्तु सेतुद्वयं सदा।।

नवाक्षराणि मन्त्रेषु शारदा मंत्रगोचरे। नवस्वरास्तु मां नित्यं नासादिषु समन्ततः।।

वातपित्तकफेभ्यस्तु त्रिपुरायास्तु त्र्यक्षरम्। नित्यं रक्षतु भूतेभ्यः पिशाचेभ्यस्तथैव च।।

तत् सेतु सततं पाता क्रव्याद्भ्यो मान्निवारकौ। नमः कामेश्वरी देवीं महामायां जगन्मयीम्।।

या भूत्वा प्रकृतिर्नित्यं तनोति जगदायतम्। कामाख्यामक्षमाला भयवरदकरां सिद्धसूत्रैकहस्तां।।

श्वेतप्रेतोपरिस्थां मणिकनकयुतां कुंकुमापीतवर्णाम्। ज्ञानध्यानप्रतिष्ठा मतिशयविनयां ब्रह्मशक्रादिवन्द्या।।

मग्नौ विन्द्वन्तमन्त्रप्रियतमविषयां नौमि विद्धयैरतिस्थाम्। मध्ये मध्यस्थ भागे सततविनमिता भावहारावली या लीला लोकस्य कोष्ठे सकलगुणयुता व्यक्तरूपैकनम्रा।।

विद्या विद्यैकशान्ता शमनशमकरी क्षेमकर्त्री वरास्या। नित्यं पायात् पवित्रप्रणववरकरा कामपूर्व्वेश्वरी नः।।

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413

इति हरः कवचं तनुकेस्थितं शमयति व्यतिक्रम्य शिवे यदि। इह गृहाण यतस्व विमोक्षणे सहित एष विधिः सह चामरैः।।

इतीदं कवचं यस्तु कामाख्यायाः पठेद् बुधः। सुकृत् तं तु महादेवी तनु व्रजति नित्यदा।।

नाधिव्याधिभयं तस्य न क्रव्याद्भ्यो भयं तथा। नाग्नितो नापि तोयेभ्यो न रिपुभ्यो न राजतः।।

दीर्घायुर्बहुभोगी च पुत्रपौत्रसमन्वितः। आवर्त्तयन् शतं देवी मन्दिरे मोदते परे।।

यथा तथा भवेद् बद्धः संग्रामेऽन्यत्र वा बुधः। तत्क्षाणदेव मुक्तः स्यात् स्मरणात् कवचस्य तु।।

भगवती कामाख्या सिद्धिफल (सत्य घटना)- पूर्वकाल में एक उच्चकोटि साधक ब्रह्मानन्दजी हुए थे। इन्होंने अपने जन्मस्थान पर कामाख्या सिद्धि प्राप्ति हेतु चिरकाल तक उत्कट तपस्या की, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। अंत में ये अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु वहां से कामाख्या क्षेत्र चले गये। कामाख्या पहुंचकर ये अन्न जल छोड़कर तपस्या में लीन हो गये। इनकी कठिन तपस्या से विचलित होकर भगवती कामाख्या ने वहां के नरेश को स्वप्न में आदेश दिया कि- 'ब्रह्मानन्द तीन दिन से निराहार

रहकर मेरे नाट्यमन्दिर में उत्कट तपस्या कर रहा है। तुम इसे कामाख्या क्षेत्र से दूर कर दो, अन्यथा वह मुझे बड़ा कष्ट देगा।' इस स्वप्न को माता का आदेश मानकर राजा ने प्रातःकाल भगवती के नाट्यमन्दिर में जाकर देखा कि एक सन्यासी नेत्र बंद किये हुए ध्यानावस्था में मग्न होकर आसन पर बैठा हुआ है। राजा उस सन्यासी का ध्यान भग्न करने का साहस नहीं कर पाया। कुछ समय बाद आरती में प्रयुक्त घण्टे की ध्वनि से जब ब्रह्मानन्द का ध्यान भंग हुआ, तब राजा ने उनसे कामाख्या स्थान छोड़कर जाने को कहा और इसे माता का आदेश बताया। ब्रह्मानन्द तत्क्षण वहां से हट गये। वह दिन में किसी और स्थान पर जपतप करते तथा रात्रि में पुनः भगवती के नाट्यमन्दिर में आ जाते थे।

एक दो दिन बाद भगवती ने पुनः राजा को स्वप्न में निर्देश दिया कि तुम ऐसी व्यवस्था करो, जिससे ब्रह्मानन्द कामाख्या क्षेत्र में प्रवेश ही न कर सके। इसके अनुपालन में राजा ने स्थान-स्थान पर प्रहरी नियुक्त कर दिये। अब ब्रह्मानन्द कुछ विचलित हो गये। फिर भी उन्होंने ऐसा विचार किया कि जब देवी बार-बार राजा को इस तरह के निर्देश दे रही है, तो अवश्य ही वह मेरा स्मरण कर रही हैं। इस अवस्था में तप छोड़ना उचित नहीं है। ऐसा सोचते-सोचते भ्रमण करते हुए उन्होंने कामाख्या क्षेत्र में एक मृत हाथी की आड़ में छिपकर

रात्रिकाल में जप करने का निश्चय किया, किंतु राजा ने पुनः देवी के आदेश से वहां भी प्रहरी नियुक्त कर दिये।

इसके बाद भी ब्रह्मानन्द ने हार न मानी और काफी सोच विचार करने के बाद जब कोई और मार्ग न दिखा तो एक पर्वत के तलप्रदेश में स्थित खट (शौचादि हेतु सामूहिक स्थान) के मध्य में प्रविष्ट होकर जप तप करने का निश्चय किया। उस प्राचीन समय में वहां के लोग इस प्रकार के स्थान पर ही मलमूत्र का त्याग करते थे। रात्रि में ब्रह्मानन्द ने खट के मध्य में स्थित होकर विष्टा में शरीर को कण्ठ तक डुबोकर जप करना आरम्भ कर दिया। ऐसी कठिन एवं अटल साधना करने पर भगवती कामाख्या उनसे प्रसन्न हुईं तथा प्रकट होकर बोली– 'ब्रह्मानन्द! उठो अब तुम्हें और तप की आवश्यकता नहीं है।' ब्रह्मानन्द उसे अनसुना करते हुए जप में ही निमग्न रहे।

भगवती पुनः बोली– 'ब्रह्मानन्द! उठो, वर मांगो।

ब्रह्मानन्द बोले– तुम कौन हो?'

देवी बोली– 'मैं तुम्हारी इष्ट देवता हूं। तुम जिसके चिंतन में लगे हो, मैं वही हूं।'

ब्रह्मानन्द बोले– 'मैं कैसे विश्वास करुं कि तुम मेरी इष्टदेवता हो। मैंने समझा कि तुम प्रहरी हो जो मुझे प्रताड़ित करने आयी हो।'

देवी बोली– 'मैं तुम्हारे विश्वास के लिये कह रही हूं कि विष्ठा का यह खट अब पूर्ण चन्दन का हो गया है। क्या तुम यह समझ नहीं पा रहे हो?'

ब्रह्मानन्द बोले– 'नहीं, मैं उस तरफ मनक्षेप नहीं कर रहा हूं। मैं केवल जगन्माता के श्रीचरणों का स्मरण कर रहा हूं।'

देवी पुनः बोली– 'मैं आ गयी हूं। तुम आंख खोलो और मुझे देखो।'

यह सुनकर ब्रह्मानन्द बोले– 'यदि तुम मेरी इष्टदेवता हो और मुझे वर देने आयी हो तो मेरी प्रार्थना से मेरी भोग्या बन जाओ।'

देवी बोली– मैं केवल शिव की हूं। मैं अन्य किसी की भोग्या नहीं हो सकती। मैं स्त्री रूप में समस्त जगत् में व्याप्त रहती हूं।

ब्रह्मानन्द बोले– आपकी कृपा से मैं सब कुछ जान गया हूं, किंतु मेरी सेवा के लिये अन्य कोई भी नहीं है। इसलिये मुझे भोग्या की आवश्यकता है।

तब देवी बोली– 'मैं तुम्हें भोगार्थ हेतु उमा तथा वासा नाम की दो नायिकाएं दे रहीं हूं। इन दोनों को ग्रहण कर भोग करो।' यह सुनकर दोनों नायिकाएं बोली– मां! हम दोनों से कितने

समय तक इस यंत्रणा भोग को कराओगी? उनके ऐसा कहने पर देवी ने कहा– 'जब तक तुम दोनों को हटने को न कहा जाये, तब तक ब्रह्मानन्द के आदेश का पालन करो और यह कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गयी।

इस घटना के पश्चात् ब्रह्मानन्द दोनों नायिकाओं के साथ भ्रमण करने लगे। अपने उपवेशन के निमित्त उन्होंने एक प्रस्तरासन का निर्माण किया, जिसका भार बीस मन से कम न था। वह जहां–जहां जाते थे, उनके प्रस्तरासन को दोनों नायिकाएं वहां–वहां तक पहुंचाती थीं। वे दोनों नायिकाएं केवल ब्रह्मानन्द को ही दिखाई देती थी, अन्य किसी को नहीं। इस कारण से उनके आसन को आकाश मार्ग में चलता देखकर सब लोग आश्चर्यचकित होते थे और ब्रह्मानन्द को देवरूप में जानने लगे थे।

वास्तव में साधक चाहे तो अपने आत्मबल और मंत्रबल के द्वारा देवता से अत्यन्त दुर्लभ सिद्धि प्राप्त कर सकता है। परंतु इस कलिकाल में मनुष्य बहुत थोड़े से कष्ट या विघ्न से टूटकर साधना को या तो छोड़ देता है या अन्य देवता का चुनाव कर लेता है। यही साधना क्षेत्र में साधक का सबसे बड़ा दोष होता है। मनुष्य इस तथ्य को सदैव स्मरण रखे कि– जितनी दुर्लभ सिद्धि होगी उतना ही शरीर को तपाना होगा और उतना ही समय देवोपसाना में देना होगा।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

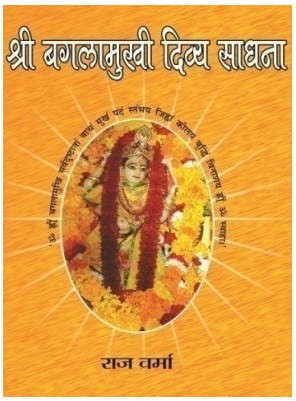

Shri Raj verma ji
Email-mahakalshakti@gmail.com
09897507933, 07500292413